

७०. चिलातपुत्रस्याख्यानम्

चञ्चत्सत्केवलज्ञानलोचनं श्रीजिनेश्वरम्। नत्वा चिलातपुत्रस्य चरित्रं रचयाम्यहम् ॥१॥
 पुरे राजगृहे राजाभवत्प्रश्रेणिको महान्। एकदा पुरबाह्येऽसौ निर्गतो निजलीलया ॥२॥
 दुष्टाश्वेन ततो नीतो महाटव्यां प्रवेगतः। तत्रस्थयमदण्डस्य महाटव्या महीपतेः ॥३॥
 तिलकादिवतीं कन्यां दृष्ट्वा सद्रूपशालिनीम्। तदा कन्दर्पबाणेन विद्धोसौ भूपतिस्तराम् ॥४॥
 प्रोक्तं च यमदण्डेन हे नरेन्द्र विचक्षण। अस्याः पुत्राय चेद्राज्यं दीयते भवता ध्रुवम् ॥५॥
 तदा तुभ्यं ददाम्येतां स्वपुत्रीं तिलकावतीम्। तच्छ्रुत्वेवं करिष्यामि प्रोक्त्वा चेति महीपतिः ॥६॥
 तां कन्यां परिणीयोच्चैस्ततः प्रश्रेणिकः सुधीः। प्राप्तो राजगृहाख्यं च स्वपुरं प्रमदान्वितः ॥७॥
 नाना भोगान्प्रभुञ्जानो यावत्संतिष्ठते प्रभुः। पुत्रं चिलातपुत्राख्यं प्रसूता तिलकावती ॥८॥
 एकदा च नरेन्द्रेण पृष्टो नैमित्तिको महान्। अहो मे बहुपुत्राणां मध्ये को भाविभूपतिः ॥९॥

७०. चिलात-पुत्र की कथा

केवलज्ञान जिनका प्रकाशमान नेत्र हैं, उन जिन भगवान् को नमस्कार कर चिलातपुत्र की कथा लिखी जाती है ॥१॥

राजगृह के राजा उपश्रेणिक एक बार हवाखोरी के लिए शहर से बाहर गए। वे जिस घोड़े पर सवार थे, वह बड़ा दुष्ट था। सो उसने उन्हें एक भयानक वन में जा छोड़ा। उस वन का मालिक एक यमदण्ड नाम का भील था। उसके एक लड़की थी। उसका नाम तिलकवती था। वह बड़ी सुन्दरी थी। उपश्रेणिक उसे देखकर काम के बाणों से अत्यन्त बंधे गये। उनकी यह दशा देखकर यमदण्ड ने उनसे कहा-राजाधिराज, यदि आप इससे उत्पन्न होने वाले पुत्र को राज्य का मालिक बनाना मंजूर करें तो मैं इसे आपके साथ ब्याह सकता हूँ। उपश्रेणिक ने यमदण्ड की शर्त मंजूर कर ली। यमदण्ड ने तब तिलकवती का ब्याह उनके साथ कर दिया। वे प्रसन्न होकर उसे साथ लिये राजगृह लौट आये ॥२-७॥

बहुत दिनों तक उन्होंने तिलकवती के साथ सुख भोगा, आनन्द मनाया। तिलकवती के एक पुत्र हुआ। इसका नाम चिलातपुत्र रखा गया। उपश्रेणिक के पहली रानियों से उत्पन्न हुए और भी कई पुत्र थे। यद्यपि राज्य वे तिलकवती के पुत्र को देने का संकल्प कर चुके थे, तो भी उनके मन में यह खटका सदा बना रहता था कि कहीं इसके हाथ में राज्य जाकर धूलधानी न हो जाये। जो हो, पर वे अपनी प्रतिज्ञा के न तोड़ने को लाचार थे। एक दिन उन्होंने एक अच्छे विद्वान् ज्योतिषी को बुलाकर उससे पूछा-पंडित जी, अपने निमित्तज्ञान को लगाकर मुझे आप यह समझाइए कि मेरे इन पुत्रों में राज्य का मालिक कौन होगा? ज्योतिषी जी बहुत कुछ सोच-विचार के बाद राजा से बोले-सुनिये महाराज, मैं आपको इसका खुलासा कहता हूँ। आपके सब पुत्र खीर का भोजन करने को एक जगह बिठाएँ जायें और उस समय उन पर कुत्तों का एक झुंड छोड़ा जाये। तब उन सबमें जो

तत्समाकर्ण्य स प्राह सुधीर्नैमित्तिकाग्रणीः। सिंहासनसमारूढो भेरीं सन्ताडयन्मुदा ॥१०॥
 क्षैरेयीं कुक्कुराणां च ददतो निजबुद्धितः। भुङ्क्ते तथाग्निदाहे च हस्तिसिंहासनादिकम् ॥११॥
 छत्रं निःसारयत्येव यस्तु स स्यान्महीपतिः। तन्निशम्य ततो राजा परीक्षार्थं शुभे दिने ॥१२॥
 भेरीसिंहासनाभ्यर्णो दत्त्वा क्षैरेयिकाशनम्। सर्वराजकुमाराणां मुक्ताः पञ्चशतश्वकाः ॥१३॥
 तदा नष्टाः कुमारास्ते सर्वे कुक्कुरभीवशाः। श्रेणिकस्तु महाधीमान्सर्वपुत्रशिरोमणिः ॥१४॥
 क्षैरेयीभाजनान्युच्चैर्धृत्वा स्वस्य समीपके। एकैकं कुक्कुराणां च मुञ्चन्तद्भाजनं पुनः ॥१५॥
 स्वसिंहासनमारुह्य भेरीं सन्ताडयन्तथा। भुङ्क्ते स्म प्रौढधीः सार-क्षैरेयीमग्निदाहके ॥१६॥
 तथा सिंहासनं छत्रं हस्तिचामरयुग्मकम्। शीघ्रं निस्सारयामास भावितीर्थकरः प्रभुः ॥१७॥
 ज्ञात्वा प्रश्रेणिकेनायं महाराजो भविष्यति। तदा शत्रुभयाच्छ्रीघ्रं दत्त्वा दोषं प्रपञ्चतः ॥१८॥

निडर होकर वहीं रखे हुए सिंहासन पर बैठे नगारा बजाता जाये और भोजन भी करता जाये और दूसरे कुत्तों को भी डालकर खिलाता जाये, उसमें राजा होने की योग्यता है। मतलब यह कि अपनी बुद्धिमानी से कुत्तों के स्पर्श से अछूता रहकर आप भोजन कर ले ॥८-१०॥

दूसरा निमित्त यह होगा कि आग लगने पर जो सिंहासन, छत्र, चाँवर आदि राज्यचिह्नों को निकाल सके, वह राजा हो सकेगा इत्यादि और कई बातें हैं, पर उनके विशेष कहने की जरूरत नहीं ॥११-१२॥

कुछ दिन बीतने पर उपश्रेणिक ने ज्योतिषी जी के बताये निमित्त की जाँच करने का उद्योग किया। उन्होंने सिंहासन के पास ही एक नगारा रखवाकर वहीं अपने सब पुत्रों को खीर खाने को बैठाया। वे जीमने लगे कि दूसरी ओर से कोई पाँच सौ कुत्तों का झुण्ड दौड़कर उन पर लपका। उन कुत्तों को देखकर राजकुमारों के तो होश गायब हो गए। वे सब चीख मारकर भाग खड़े हुए। पर हाँ एक श्रेणिक जो इन सबसे वीर और बुद्धिमान् था, उन कुत्तों से डरा नहीं और बड़ी फुरती से उठकर उसने खीर परोसी हुई बहुत-सी पत्तलों को एक ऊँची जगह रख कर आप पास ही रखे हुए सिंहासन पर बैठ गया और आनन्द से खीर खाने लगा। साथ में वह उन कुत्तों को भी थोड़ी-थोड़ी देर बाद एक एक पत्तल उठा-उठा डालता गया और नगारा बजाता गया, जिससे कि कुत्ते उपद्रव न करें ॥१३-१६॥

इसके कुछ दिनों बाद उपश्रेणिक ने दूसरे निमित्त की भी जाँच की। अब की बार उन्होंने कहीं कुछ थोड़ी-सी आग लगवा लोगों द्वारा शोरगुल करवा दिया कि राजमहल में आग लग गई। श्रेणिक ने जैसे ही आग लगने की बात सुनी वह दौड़ा गया और झटपट राजमहल से सिंहासन, चाँवर आदि राज्यचिह्नों को निकाल बाहर हो गया। यही श्रेणिक आगे तीर्थकर होगा ॥१७॥

श्रेणिक की वीरता और बुद्धिमानी देखकर उपश्रेणिक को निश्चय हो गया कि राजा यही होगा। इसी के यह योग्य भी है। श्रेणिक के राजा होने की बात तब तक कोई न जान पाए जब तक

कुक्कुरोच्छिष्टकादिं च देशान्निर्घाटितः स च। अहो पुण्यवतां पुंसां को वा यत्नं करोति न ॥१९॥
 तदा गत्वा कुमारोसौ श्रेणिकः सुभटाग्रणीः। पुर्यां द्राविडदेशस्थ-काञ्च्यां सौख्येन संस्थितः ॥२०॥
 प्रश्रेणिकस्तु भूनाथो भुक्त्वा भोगान्सुधार्मिकः। तस्मै चिलातपुत्राय दत्त्वा राज्यं महोत्सवैः ॥२१॥
 स्वयं वैराग्यतः स्वामी दीक्षां जैनैश्वरीं शुभाम्। समादाय मुनिर्जातो जगत्प्राणिहितंकरः ॥२२॥
 ततश्चिलातपुत्रश्च स्थित्वा राज्येऽपि मूढधीः। अन्यायेषु रतो गाढं हा कष्टं किमतः परम् ॥२३॥

वह अपना अधिकार स्वयं अपनी भुजाओं द्वारा प्राप्त न कर ले। इसके लिए उन्हें उसके रक्षा की चिन्ता हुई। कारण उपश्रेणिक राज्य का अधिकारी तिलकवती के पुत्र चिलात को बना चुके थे और इस हाल में किसी दुश्मन को या चिलात के पक्षपातियों को यह पता लग जाता कि इस राज्य का राजा तो श्रेणिक ही होगा, तब यह असम्भव नहीं था कि वे उसे राजा होने देने के पहले ही मार डालते। इसलिए उपश्रेणिक को यह चिन्ता करना वाजिब था, समयोचित और दूरदर्शिता का था। इसके लिए उन्हें एक अच्छी युक्ति सूझ गई और बहुत जल्दी उन्होंने उसे कार्य में भी परिणत कर दिया। उन्होंने श्रेणिक के सिर पर यह अपराध मढ़ा कि उसने कुत्तों का झूठा खाया, इसलिए वह भ्रष्ट है। अब वह न तो राजघराने में ही रहने योग्य रहा और न देश में ही। इसलिए मैं उसे आज्ञा देता हूँ कि वह बहुत जल्दी राजगृह से बाहर हो जाये। सच है पुण्यवानों की सभी रक्षा करते हैं ॥१८-१९॥

श्रेणिक अपने पिता की आज्ञा पाते ही राजगृह से उसी समय निकल गया। वह फिर पलभर के लिए भी वहाँ न ठहरा। वहाँ से चलकर वह द्राविड देश की प्रधान नगरी काँची में पहुँचा। उसने अपनी बुद्धिमानी से वहाँ कोई ऐसा वसीला लगा लिया जिससे उसके दिन बड़े सुख से कटने लगे ॥२०॥

इधर उपश्रेणिक कुछ दिनों तक तो और राजकाज चलाते रहे। इसके बाद कोई ऐसा कारण उन्हें देख पड़ा जिससे संसार और विषयभोगों से वे बहुत उदासीन हो गए। अब उन्हें संसार का वास एक बहुत ही पेचीला जाल जान पड़ने लगा। उन्होंने तब अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार चिलातपुत्र को राजा बनाकर सब जीवों का कल्याण करने वाला मुनिपद ग्रहण कर लिया ॥२१-२२॥

चिलात-पुत्र राजा हो गया, पर उसका जाति-स्वभाव न गया और ठीक भी है कौए को मोर के पांख भले ही लगा दिये जायें, पर वह मोर न बनकर रहेगा कौआ का कौआ ही। यही दशा चिलातपुत्र की हुई। वह राजा बना भी दिया गया तो क्या हुआ, उसमें अगत के तो कुछ गुण नहीं थे, तब वह राजा होकर भी क्या बड़ा कहला सका? नहीं। अपने जाति स्वभाव के अनुसार प्रजा को कष्ट देना, उस पर जबरन जोर-जुल्म करना उसने शुरू किया। यह एक साधारण बात है कि अन्यायी का कोई साथ नहीं देता और यही कारण हुआ कि मगध की प्रजा की श्रद्धा उस पर से बिल्कुल ही उठ गई। सारी प्रजा उससे हृदय से नफरत करने लगी। प्रजा का पालक होकर जो राजा उसी पर अन्याय करे तब उससे बढ़कर और दुःख की बात क्या हो सकती है? ॥२३॥

श्रेणिकस्तु समागत्य तदा राजगृहं पुरम्। देशान्निर्घाट्य तं शीघ्रं स्वयं राज्ये सुखं स्थितः ॥२४॥
 अहो राजाभवत्युच्चै-र्यः प्रजाप्रतिपालकः। नान्यो लोकद्वये स्वस्य कीर्तिलक्ष्मीविनाशकः ॥२५॥
 गत्वा चिलातपुत्रश्च महाटव्यां बलान्वितः। दुर्गं कृत्वा तथा देशकरं गृह्णाति निर्भयः ॥२६॥
 अथास्य विद्यते कोपि भर्तृमित्राख्यसत्सखा। तस्यापि भर्तृमित्रस्य मातुलो रुद्रदत्तवाक् ॥२७॥
 सुभद्रां स्वसुतां तस्मै भर्तृमित्राय याचिताम्। न ददाति ततश्चापि भर्तृमित्रस्य वाक्यतः ॥२८॥
 युक्तश्चिलातपुत्रोसौ भटैः पञ्चशतैर्द्रुतम्। गत्वा राजगृहं कोपा-द्विवाहस्नानकालके ॥२९॥
 तां छलेन समादाय निर्गतः क्रूरमानसः। तच्छ्रुत्वा श्रेणिको राजा ससैन्यः पृष्टतोगमत् ॥३०॥
 पलायितुमशक्तेन तेन दुष्कर्मकारिणा। सुभद्रा मारिता कन्या संजाता व्यन्तरी तदा ॥३१॥
 शीघ्रं चिलातपुत्रेण नश्यता च स्वकर्मतः। वैभारपर्वते रम्ये मुनिपञ्चशताश्रितम् ॥३२॥
 मुनीन्द्रं मुनिदत्ताख्यं दृष्ट्वा नत्वा सुभक्तितः। प्रोक्तं स्वामिस्तपो देहि साधयामि निजं हितम् ॥३३॥

परन्तु इसके साथ यह भी बात है कि प्रकृति अन्याय को नहीं सहती। अन्यायी को अपने अन्याय का फल तुरन्त मिलता है। चिलातपुत्र के अन्याय की डुगडुगी चारों ओर पिट गई। श्रेणिक को जब यह बात सुन पड़ी तब उससे चिलातपुत्र का प्रजा पर जुल्म करना न सहा गया। वह उसी समय मगध की ओर रवाना हुआ। जैसे ही प्रजा को श्रेणिक के राजगृह आने की खबर लगी उसने उसका एकमत होकर साथ दिया। प्रजा की इस सहायता से श्रेणिक ने चिलात को राज्य से बाहर निकाल आप मगध का सम्राट् बना। सच है, राजा होने के योग्य वही पुरुष है जो प्रजा का पालन करने वाला हो। जिसमें यह योग्यता नहीं वह राजा नहीं किन्तु इस लोक में तथा परलोक में अपनी कीर्ति का नाश करने वाला है ॥२४-२५॥

चिलात पुत्र मगध से भागकर एक वन में जाकर बसा। वहाँ उसने एक छोटा-मोटा किला बनवा लिया और आसपास के छोटे-छोटे गाँवों से जबरदस्ती कर वसूल कर आप उनका मालिक बन बैठा। इसका भर्तृमित्र नाम का एक मित्र था। भर्तृमित्र के मामा रुद्रदत्त के एक लड़की थी। सो भर्तृमित्र ने अपने मामा से प्रार्थना की-वह अपनी लड़की का ब्याह चिलातपुत्र के साथ कर दे। उसकी बात पर कुछ ध्यान न देकर रुद्रदत्त चिलातपुत्र को लड़की देने से साफ मुकर गया। चिलातपुत्र से अपना वह अपमान न सहा गया। वह छुपा हुआ राजगृह में पहुँचा और विवाहित स्नान करती हुई सुभद्रा को उठा चलता बना। जैसे ही यह बात श्रेणिक के कानों में पहुँची वह सेना लेकर उसके पीछे दौड़ा। चिलातपुत्र ने जब देखा कि अब श्रेणिक के हाथ से बचना कठिन है, तब उस दुष्ट निर्दयी ने बेचारी सुभद्रा को जान से मार डाला और आप जान बचाकर भागा। वह वैभारपर्वत पर से जा रहा था कि उसे वहाँ एक मुनियों का संघ देख पड़ा। चिलातपुत्र दौड़ा हुआ संघाचार्य श्री मुनिदत्त मुनिराज के पास पहुँचा और उन्हें हाथ जोड़ सिर नवा उसने प्रार्थना की कि प्रभो, मुझे तप दीजिए, जिससे मैं अपना हित कर सकूँ। आचार्य ने तब उससे कहा-प्रिय, तूने बड़ा अच्छा सोचा जो तू तप लेना चाहता है। तेरी आयु अब सिर्फ आठ दिन की रह गई है। ऐसे समय जिनदीक्षा लेकर

स च प्राह मुनिर्ज्ञानी जैनतत्त्वविदाम्बरः। सुधीः शीघ्रं समादाय जैनीं दीक्षां सुखप्रदाम् ॥३४॥
 साधय त्वं निजं कार्यं तवायुर्दिवसाष्टकम्। ततश्चिलातपुत्रोसौ श्रुत्वा वाक्यं महामुनेः ॥३५॥
 गृहीत्वा सुतपो जैनं संसाराभोधितारणम्। स्थितः प्रायोपयानाख्य-मरणे धीरमानसः ॥३६॥
 श्रेणिकस्तु महाराजस्तं विलोक्य तथास्थितम्। नत्वा प्रशस्य सद्भक्त्या पश्चात्प्राप्तो निजं पुरम् ॥३७॥
 सुभद्रा व्यन्तरी सा च पूर्ववैरेण पापिनी। सोलिकारूपमादाय स्थित्वा तन्मस्तके तदा ॥३८॥
 चञ्च्वा तल्लोचनद्वंद्वं सन्निष्काश्य प्रकष्टतः। पश्चादष्टदिनेषूच्चैर्विकृत्य मधुमक्षिका ॥३९॥
 चक्रे पीडां सुधीः सोपि निःस्पृहो निजविग्रहे। मृत्वा समाधिना स्वामी प्राप्तः सर्वार्थसिद्धिकाम् ॥४०॥
 स श्रीमान्सुभटाग्रणीर्गुणनिधिर्जित्वोपसर्गं दृढं श्रीमज्जैनपदाब्जचिन्तनपरो देवेन्द्रवृन्दैः स्तुतः।
 संप्राप्तो निजपुण्यसंबलयुतः सर्वार्थसिद्धिं शुभां दद्याच्चारुचिलातपुत्रसुमुनिर्भव्योत्र मे मङ्गलम् ॥४१॥
 इति कथाकोशे महामण्डलेश्वर-श्रीश्रेणिक-सुत-चिलातपुत्रस्याख्यानं समाप्तम्।

७१. श्रीधन्यमुनेराख्यानम्

नमस्कृत्य जिनाधीशं सारधर्मोपदेशकम्। धन्यनाममुनेर्वचि चरित्रं शर्मदायकम् ॥१॥

तुझे अपना हित करना उचित ही है। मुनिराज से अपनी जिन्दगी इतनी थोड़ी सुन उनसे उसी समय तप ले लिया जो संसार-समुद्र से पार करने वाला है। चिलातपुत्र तप लेने के साथ ही प्रायोपगमन संन्यास ले धीरता से आत्मभावना भाने लगा। इधर उसके पकड़ने को पीछे आने वाले श्रेणिक ने वैभारपर्वत पर आकर उसे इस अवस्था में जब देखा तब उसे चिलातपुत्र की इस धीरता पर बड़ा चकित होना पड़ा। श्रेणिक ने तब उसके इस साहस की बड़ी तारीफ की। इसे बाद वह उसे नमस्कार कर राजगृह लौट आया। चिलातपुत्र ने जिस सुभद्रा को मार डाला था, वह मरकर व्यन्तर देवी हुई। उसे जान पड़ा कि मैं चिलातपुत्र द्वारा बड़ी निर्दयता से मारी गई हूँ। मुझे भी तब अपने बैर का बदला लेना ही चाहिए। यह सोचकर वह चील का रूप ले चिलात मुनि के सिर पर आकर बैठ गई उसने मुनि को कष्ट देना शुरू किया। पहले उसने चोंच से उनकी दोनों आँखें निकाल लीं और बाद मधुमक्खी बनकर वह उन्हें काटने लगी। आठ दिन तक उन्हें उसने बेहद कष्ट पहुँचाया। चिलातमुनि ने विचलित न हो इस कष्ट को बड़े शान्ति से सहा। अन्त में समाधि से मरकर उसने सर्वार्थसिद्धि प्राप्त की ॥२६-४०॥

जिस वीरों के वीर और गुणों की खान चिलात मुनि ने ऐसा दुःसह उपसर्ग सहकर भी अपना धैर्य नहीं छोड़ा और जिनेन्द्र भगवान् के चरणों का, जो कि देवों द्वारा भी पूज्य हैं, खूब मन लगाकर ध्यान करते रहे और अन्त में जिन्होंने अपने पुण्यबल से सर्वार्थसिद्धि प्राप्त की वे मुझे भी मंगल दें ॥२६-४१॥

७१. धन्य मुनि की कथा

सर्वोच्च धर्म का उपदेश करने वाले श्रीजिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर धन्य नाम के मुनि की कथा लिखी जाती है, जो पढ़ने या सुनने से सुख प्रदान करने वाली है ॥१॥

जम्बूद्वीप पूर्व की ओर बसे हुए विदेह क्षेत्र की प्रसिद्ध राजधानी वीतशोकपुर का राजा अशोक